जो हमेशा का जीवन चाहता है उसके लिए शुभ समाचार

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को (उत्पत्ति 1:1) और जो कुछ उसमें है सब कुछ **रचा** (कुलुस्सियों 1:16)। उसकी सबसे उत्तम रचना **पुरुष** और **स्त्री** की थी जिन्हें उसने अपने स्वरूप में रचा (उत्पत्ति 1:26-28)। परंतु बाद में उन्होंने परमेश्वर की **आज्ञा का उल्लंघन किया**। और **पाप** ने जगत में प्रवेश किया। पाप का परिणाम **मृत्यु** थी (रोमियों 6:23) जो सब मनुष्यों में फैल गई क्योंकि प्रत्येक जिसका जन्म प्रथम पुरुष आदम के बाद हुआ उसमें उसका पापी स्वभाव था (रोमियों 3:23; 5:12)।

परन्तु **परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा** कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत के उद्धारकर्ता के रूप में भेज दिया (यूहन्ना 3:16)। यीशु का जन्म कुंवारी से हुआ, परमेश्वर उसका पिता था, इसलिए उसमें दूसरे मनुष्यों के समान पापी स्वभाव नहीं था और इस कारण उसका जीवन पापरहित था। इसने **केवल यीशु ही को इस योग्य ठहराया** कि केवल वह जगत के पापों के लिए **परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बलिदान हो**।

1 कुरिन्थियों 15:3-6 पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह **हमारे पापों के लिये मर गया**, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन **जी भी उठा**, और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। फिर वह पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया,

2 कुरिन्थियों 5:19 और 21 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, **और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया**, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। जो **पाप से अज्ञात** था, उसी को उसने **हमारे लिये पाप ठहराया** कि **हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ**।

रोमियों 3:22-25 **अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है।** इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, **परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा** जो मसीह यीशु में हैं, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने **उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है।**

इब्रानियों 9:22 और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।

इब्रानियों 9:12-13 यीशु **अपने ही लहू के द्वारा,** एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और **अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।** जो सब विश्वास करनेवालों के लिये है।

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि **जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।**

यूहन्ना 1:12 परन्तु जितनों ने **उसे ग्रहण किया**, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो **उसके नाम पर विश्वास रखते है।**

यदि आप इस सत्य पर विश्वास करते हैं तो आपको अपने पापों की क्षमा प्राप्त होगी और यीशु से केवल बात करने के द्वारा आप तुरंत अनंत जीवन पाएंगे :

(1) उसके सामने अंगीकार करें कि आप एक पापी हैं और

(2) यह कि आप विश्वास करते हैं कि वह उद्धारकर्ता है तथा

(3) यीशु को अपने जीवन में आने को कहें, वह आपका प्रभु हो और आपकी सहायता करे कि आप वह बनें जो यीशु चाहता है कि आप हों।

यूहन्ना 14:6 यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; **बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।**

प्रेरितों के काम 4:12 **किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं**; क्योंकि स्वर्ग के नीचे **मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं** दिया गया, **जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।**"